International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2016, Submitted in July 2016, iajesm2014@gmail.com

उद्यानिकी से आर्थिक बदलाव

डॉ मदन लाल, प्राचार्य एवं व्याख्याता भूगोल, गुरुनानक कन्या महाविद्यालय, गजसिंगपुर।
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का परिचय

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान का कृषि प्रधान जिला है। जिले की भौगोलिक स्थिति $29^0 5'$ उत्तरी अक्षांश से $30^0 6'$ उत्तरी अक्षांश व $74^0 0'$ पूर्वी देशान्तर से $75^0 3'$पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 9656.09 वर्ग किलोमीटर है। भारतीय कृषि में उद्यानिकी का बड़ा महत्त्व है। उद्यानिकी न केवल जीविकोपार्जन का साधन है बल्कि कई उद्योग धन्धे भी इस पर आश्रित है।

हनुमानगढ़ जिले में पिछले 25 वर्षों में यातायात के साधन सड़क मार्गों व संचार में भारी परिवर्तन मिलता है। हनुमानगढ़ जिले में सड़कें व उनका वर्गीकरण (तालिका–1) में दर्शाया गया है। इसके साथ–साथ आधुनिक संचार क्रांति का भी भरपूर उपयोग हो रहा है।

तालिका संख्या 1: जिले में सड़कें और उनका वर्गीकरण (किमी में) (वर्ष 1975–2011)

क्र.सं.	वर्गीकरण	1975	2011	अन्तर	सड़क से जुड़े गांवों की संख्या
1	राष्ट्रीय राजमार्ग	136	136	0	वर्ष 1975 280
2	पेन्ट की हुई सड़कें	1319	597776	596448	वर्ष 2011 2283
3	धात्विक सड़के	33	458.56	425.56	
4	कंकरिट सड़के	60	400	340	
5	कच्चे मार्ग	200	–	–	
		1748	598761.56	597013.56	

स्रोत – कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सा. निर्माण विभाग हनुमानगढ़

तालिका क्रमांक (1) से स्पष्ट है कि हनुमानगढ़ जिले में पिछले 25 वर्षों से सड़क मार्गों में उतरोत्तर वृद्धि हुई है, जो उद्यानिकी में सुधार व उद्यानिकी गहनता में वृद्धि का ही परिणाम है। क्षेत्र में उद्यानिकी से ही जिले की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान हुई है, जिस कारण कृषकों को उत्पादित जिन्सों को यथाषीघ्र बाजार में पहुँचाने के लिए सड़क मार्गों की आवष्यकता में वृद्धि हुई है। क्षेत्र में वर्ष 1975 में कुल सड़कों की लम्बाई 1748 कि.मी. थी जो 2011 में बढ़कर 588761.56 हो गई है, जिसमें 35 वर्षों में 597013.56 कि.मी. की वृद्धि हुई है। वहीं राष्ट्रीय राजमार्ग की लम्बाई 136 कि. मी. है। क्षेत्र में पेन्ट की हुई सड़क वर्ष 1975 में 1319 कि.मी. थी जो वर्ष 2011 में वृद्धि के साथ 597767 कि.मी. है जिसमें 596448 किमी की वृद्धि हुई है। धात्विक सड़कें वर्ष 1975 में 33 कि.मी. थी जो 2011 में 458.56 किमी है जिसमें 425.56 कि.मी. की वृद्धि हुई है। शोध क्षेत्र में कंकरीट सड़कों की लम्बाई वर्ष 1975 में 60 कि.मी. थी वर्ष 2011 में 340 किमी की वृद्धि के साथ 400 कि.मी. हो गई है। सड़क मार्गों में वृद्धि के कारण ही क्षेत्र में उद्यानिकी एवं अन्य सहक्रियाओं में वृद्धि हुई है।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

प्रस्तावित शोध के सोपान

कृषि प्रधान जिले में जैसे–जैसे उद्यानिकी में सुधार हुआ है वैसे–वैसे भूमि की उत्पादन क्षमता में भी वृद्धि आई है। जिले में नहरी सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र को सिंचाई जल उपलब्ध हुआ, वहीं ग्रामीणों में पेयजल की समस्या से निदान मिला है।

कृषि विस्तार केन्द्र द्वारा भी ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों को पेयजल डिग्गी के निर्माण के लिए अनुदान देय किया जाता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में आपणी योजना के तहत (जर्मन सहायता परियोजना) हनुमानगढ़ जिलों की नोहर व भादरा तहसीलों को पेयजल उपलब्ध करवाने के उद्देष्य से स्थापित की गई है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. उद्यानिकी से आर्थिक परिवर्तन के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करना।
2. उद्यानिकी से आर्थिक बदलाव के कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आर्थिक बदलाव का क्षेत्रीय विकास एवं भावी योजनाओं में महत्त्व।
4. कृषि (परम्परागत कृषि) को छोड़ गैर परम्परागत कृषि के लाभकारी पहलू का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का महत्व

जिले में 20 सिंचित एवं असिंचित गांवों का अध्ययन किया गया है जिसमें 15 परिवार सवर्ण जाति, 15 परिवार पिछड़ी जाति, 10 परिवार अनुसूचित जाति, 10 परिवार अल्पसंख्यक जाति से है। जिले से आहार एवं पोषाहार इशा काफी उच्च पायी गयी है। वर्ष 2015–16 में सभी परिवार भोजन में रोटी का उपयोग करते हैं। चावल का प्रयोग 90 प्रतिशत जातियां करती है। सब्जी, दाल, दूध का अनुपात सवर्ण एवं पिछड़ी जाति में अन्य जातियों से उच्च पाया गया। मांसाहार का प्रयोग सबसे अधिक अल्पसंख्यक जाति में पाया गया।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2009–10 में रोटी एवं चावल का प्रयोग वर्ष 2015–16 के समान रहा किन्तु सब्जी–दाल, दूध का प्रयोग वर्ष 2015–16 के समान रहा किन्तु सब्जी, दाल, दूध का प्रयोग वर्ष 2015–16 में उच्च पाया गया। मासांहार का प्रयोग 2015–16 में सवर्ण, पिछड़ी, अल्पसंख्यक में उच्च पाया गया जबकि अनुसूचित जाति में कम पाया गया।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

सार रूप में हम कह सकते हैं कि चयनित जिले में उद्यान कृषि से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है जिससे कृषक की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है। उद्यानिकी से यातायात के साधनों में वृद्धि हुई है पहले कृषि कार्य पशुओं, मानव श्रम से ही होते थे किन्तु अब ट्रेक्टरों, कम्बाइनों, कम्प्यटरीकृत लेवलर, उन्नत थ्रेसर, ड्रिलर, इंजन, विद्युत इत्यादि द्वारा शीघ्र हो जाता है। जिले में पेयजल, विद्युत, स्वास्थ्य एवं चिकित्सालय केन्द्रों में काफी वृद्धि हुई है क्योंकि उद्यान कृषि से लोगों की आय में वृद्धि हुई है। वृद्धि से लोगों ने राजनीति में प्रतिनिधित्व शुरूकर दिया और अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक सुविधाओं की झड़ी लगा दी है। अतः उद्यानिकी से लोगों का आर्थिक परिवर्तन हुआ है।

सन्दर्भ सूची

- दास गुप्ता ए.के. 1973 : स्टडीज इन युटिलाइजेशन ऑफ एग्रीकल्चर लैंड एण्ड इकोनोमिक्स डेवेलोपमेन्ट इन इण्डिया, नई दिल्ली।
- मिश्रा एस.पी.: जल संसाधन प्रबन्धन एवं सरंक्षण, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर।
- फल, फूल (त्रैमासिक पत्रिका) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली –110001
- गोठवाल, निधि 1991 : राजस्थान के अर्द्धशुष्क पूर्वीय समतल क्षेत्र की प्रमुख मसाला फसलों के क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि। पेज 3–5,
- गुर्जर, सुरज्ञान सिंह, 2008 : बूंद–बूंद सिंचाई और फपवार का लोकी की उपज पर मूल्यांकन। पेज–59–60
- इंडियन हार्टीकल्चर (त्रैमासिक पत्रिका) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली–110001
- जाट, बी. एल. एवं सिंह, जगसीर 2008 : हनुमानगढ़ जिले में सिंचाई तंत्र का विकास एवं सेम समस्या ज्योग्राफिकल आस्पैक्टस। प्रकाशित, एम. जी. एस. यू. बीकानेर।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY